सृजन || सशक्त महिला सशक्त समाज ||
Reg.No.1/1/29944/15
SRIJAN Alumni Association Shri Satya Sai Mahila Mahavidhyalaya,Bhopal

सृजन में परम्परा संगम

सृजन की सत्र 22–23 की कड़ी का रंग केसरिया रहा। वे आजादी के परवाने जिन्होंने हमारे लिए इस वतन पर जान तक न्यौछावर कर दी, उनके ओर वर्तमान पीढ़ी के मध्य सहसम्बन्धों को प्रगाढ़ करते हुए अमृत महोत्सव की श्रृंखला में 'शौर्यगाथा कार्यशाला' का आयोजन स्वराज संस्थान भोपाल में किया गया। इस कार्यशाला में इतिहास एवं पेंटिग में रूचि लेने वाले 80 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। कार्यशाला में इतिहास के विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता संग्राम के ज्ञात–अल्पज्ञात घटनाओं, स्थलों ओर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर आधारित लघु कथा लिखी और उसी पर आधारित चित्रकला विधा के विद्यार्थियों ने चित्रण किया। इस कार्यशाला में तैयार चित्रों की प्रदर्शनी लगायी गयी और सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट भी दिये गये। कार्यक्रम में महाविद्यालय की अनेक छात्राओं एवं पूर्व छात्राओं डॉ रेणु श्रीवास्तव तथा श्रीमती नीलू श्रीवास्तव ने भाग लिया।

शौर्यगाथा
धरोहर
सहयोग

सृजन संस्था भोपाल की धरोहर संस्था के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहयोगी संस्था की भूमिका निभायी। इस वर्ष 'स्वतंत्रता संग्राम और रियासतों का विलीनीकरण' राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय था। इस संगोष्ठी में एक सत्र का संचालन सृजन संस्था की ओर से डॉ. अनुराधा सिंह द्वारा किया गया। शोध संगोष्ठी में इतिहास विभाग की प्राध्यापक डॉ दीपा सिंह के साथ अनेक छात्राओं ने भाग लिया तथा संगोष्ठी के सफल संचालन में वालेण्टियर की भूमिका निभायी।

संगोष्ठी में 28 शोधपत्र पढ़े गये और चयनित शोधपत्रों का प्रकाशन आईएसएसएन जर्नल में किया गया। जर्नल की संपादक मंडल में पूर्व छात्रा डा. मेघा सिंह तथा श्रीमती नीलिमा गुर्जर रहीं।

इस बार शिक्षा के क्षेत्र में अनेक छात्राओं ने उपलब्धि प्राप्त की है। इस बार सृजन का प्रयास रहेगा कि वर्तमान में जो बैच सृजन पूर्व छात्रा संघ में सम्मिलित हो रहे हैं, उन्हें इस वर्ष के आगामी कार्यक्रमों का दायित्व सौंपा जायेगा।

शुभकामनाओं सहित

सचिव सृजन

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण

RNTU
स्वतंत्रता
रियासतों का विलीनीकरण

City भास्कर
भोपाल, शुक्रवार, 23 दिसंबर 2022

धरोहर संस्था की ओर से स्वराज संस्थान में शौर्यगाथा वर्कशॉप, इतिहास के स्टूडेंट्स ने 100 आलेख लिखे

भोपाल के युवाओं ने लिखी 100 शौर्यगाथाएं, 100 ने बनाईं इन कहानियों पर बेस्ड पेंटिंग

सिटी रिपोर्टर . भोपाल | धरोहर संस्था की ओर से गुरुवार को स्वराज संस्थान में शौर्यगाथा वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में शहर के इतिहास के स्टूडेंट्स ने देश के ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों पर 100 आलेख लिखे। इसमें कुछ ने अनलोन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कहानी लिखी, कुछ ने उन स्थानों के बारे में लिखा जहां से आजादी के परवानों ने क्रांति की लौ जलाई। खास बात यह थी कि इसमें 100 स्टूडेंट्स ने इन्हीं कहानियों को चित्रों के जरिए दिखाने की कोशिश की।

नाना की तीर्थयात्रा...

पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब पेशवा ने 1857 में क्रांतिकारियों को संगठित करने के लिए यात्रा की योजना बनाई। लेकिन, अंग्रेजों को इस यात्रा का उद्देश्य न पता चले, इसके लिए इसे तीर्थ यात्रा का रूप दिया गया। इस दौरान वे कानपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, बक्सर, गया, जनकपुर, पारसनाथ आदि जगह गए।

हनुमानगढ़ी के हरिशंकर

टीकमगढ़ में सतारा नदी के किनारे हनुमान गढ़ी को लेकर प्रचलित है कि काकोरी कांड के बाद चंद्रशेखर आजाद ने यहां वेश बदलकर डेढ़ साल तक अज्ञातवास काटा। वे यहां हरिशंकर नाम के सन्यासी के वेश में जंगल के बीच कुटिया बनाकर रहते थे। इसी जंगल में इन्होंने बंदूक से सटीक निशाना लगाना सीखा।

लहराया तिरंगा

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के बाद जब सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, तो युवाओं ने मोर्चा संभाला। ब्रजराज सिंह तिवारी, गोविंद नारायण सिंह, चंद्रप्रताप, कमलेश्वर सिंह जैसे ढेरों युवा जुटे। सबने पीली कोठी को घेर लिया, तो अंग्रेजों ने भी तोप लगा दी। इसके बाद भी तिरंगा फहराया गया।

शुक्रवार, 23 दिसंबर, 2022 | पौष कृष्ण पक्ष अमावस्या संवत् 2079
पत्रिका
digital connect patrika.com

शौर्यगाथा स्टूडेंट्स ने ऐतिहासिक घटनाओं पर लिखी कविताएं

राहतगढ़ में शहीद हुए 149 वीरों का किया चित्रण, गुमनाम नायकों को किया याद

ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. स्वराज संस्थान में धरोहर संस्था की ओर से शौर्यगाथा कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें स्वाधीनता में अपना योगदान देने वाले ज्ञात, अल्प ज्ञात 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, घटनाओं और स्थलों पर आलेख लेखन और लाइव चित्रण किया गया।

इतिहास और फाइन आर्ट के विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। छात्रों ने पहले कहानियां लिखी और फिर उन कहानियों को चित्रांकन के माध्यम से प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता दत्तोपन्त ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश मिश्रा रहे।

कई विषयों पर बनीं पेंटिंग्स

युवाओं ने राहतगढ़ में शहीद हुए 149 वीरों, बुंदेलखण्ड के बोमन दउवा, बैतूल के जननातीय नायक बिरसा गोंड, खंडवा का पंजाब मेल प्रतिकार, तरुण सेना मामराज जाट की वानर सेना, रायसेन का बोरात संग्राम, बुंदेलखण्ड का चरणपादुका और जबलपुर में तिलक की तलैया जैसी अनेक ऐतिहासिक घटनाओं पर लिखे आलेख के आधार पेंटिंग्स बनाई।

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

www.djmp.in/epaper

कल्पना भी नहीं कर सकते कि एक क्लिक से खराब हैंडराइटिंग को भी पढ़ा जा सकता है।

■ गूगल ने इसका सॉल्यूशन निकाल लिया है।

■ प्रिस्क्रिप्शन पर लिखी दवा को एआई और मशीन लर्निंग की मदद से हाइलाइट किया जा सकेगा और इसे पढ़ा जा सकता है।

गूगल लेंस से होगा काम आसान

■ इस नए फीचर को गूगल लेंस से एक्सेस किया जा सकता है।

■ इसमें केवल आपको प्रिस्क्रिप्शन की फोटो लेनी है और इसको फोटो लाइब्रेरी में अपलोड करना है।

कविता पाठन और चित्रकारी कर गुमनाम नायकों को किया याद

जागरण सिटी रिपोर्टर। इतिहास लेखन और उसके अध्ययन के तीन सूत्र हैं। अवलोकन, अभिप्राय और अनुशीलन। यदि इन तीन सूत्रों को आधार मानकर आगे बढ़ा जाए तो इतिहास संबंधी कोई चूक होने की संभावनाएं कम होंगी।

केवल इतिहास नहीं वरन् हर क्षेत्र में कार्य करने से पूर्व सबसे पहले अवलोकन कर के उसका आधार जानना चाहिए। यह बात गुरुवार को भोपाल के स्वराज संस्थान में धरोहर संस्था द्वारा आयोजित कार्यशाला 'शौर्यगाथा' में मुख्य वक्ता के तौर पर पधारे दत्तोपन्त ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डॉ मुकेश मिश्रा ने कही। कुशाभाऊ ठाकरे फाउंडेशन, सृजन संस्था एवं स्वराज संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में भोपाल के विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों के इतिहास व फाइन आर्ट के विद्यार्थियों से सहभागिता की। इतिहास के छात्रों ने जहां कविताओं का पाठन किया तो वहीं फाईन आर्ट्स के छात्रों ने स्वाधीनता संग्राम के गुमनाम नायकों की पेंटिंग बनाकर उन्हें याद किया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. नारायण व्यास व विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वराज संस्थान के निदेशक प्रो. संतोष कुमार वर्मा उपस्थित रहे।

पीपुल्स समाचार www.peoplessamachar.in
अपना भोपाल
भोपाल, गुरुवार, 20 अप्रैल, 2023 05

धरोहर संस्था द्वारा 'स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

रियासतों के विलीनीकरण के योद्धाओं को याद न रखना बड़ी गलती है: पूजा

पीपुल्स समाचार

रिपोर्टर • IamBhopal

Mobile no. 9827080406

20 अप्रैल 2023

राज्य संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई है। धरोहर संस्था द्वारा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी के पहले दिन आर्कियोलॉजिस्ट पूजा सक्सेना ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों पर लिखने और पढ़ने वाले बहुत से लोग हैं, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश के एकीकरण में अपना योगदान देकर रियासतों के विलीनीकरण हेतु आंदोलन करने वाले लोगों पर न तो बहुत लिखा गया न ही उन पर चर्चा की जाती है। उन हजारों आंदोलनकारियों को जिन्होंने भोपाल के अलावा कई अन्य रियासतों को भारत में मिलाने के लिए लगातार संघर्ष किया, परिवार के परिवार, महिलाओं और बच्चों के साथ सड़कों पर उतर आए, उन लोगों को स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका में तक नहीं देखा जाता।

भोपाल, सीहोर और रायसेन के सेनानियों ने किया संघर्ष : पूजा ने कहा कि भोपाल के नवाब ने जब भारत में मिलने से इंकार कर दिया था तो भोपाल, सीहोर रायसेन और आसपास के कई सेनानियों ने महीनों तक आंदोलन कर भोपाल को भारत में मिलाने के लिए संघर्ष किया, लेकिन आज उन योद्धाओं को याद तक नहीं किया जाता। उल्टा नवाबों को महान बताने की कोशिश की जाती है।

इस मौके पर यूपी उच्च शिक्षा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ईश्वर शरण विश्वकर्मा, वरिष्ठ प्राध्यापक ममता चंसोरिया एवं धरोहर संस्था की अध्यक्ष नीलिमा गुर्जर, डॉ. मुकेश मिश्रा उपस्थित रहे। भोपाल विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष कृष्ण मोहन सोनी ने कहा ऐसे कई तथ्य सामने आए हैं जिनमें इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया और देश को लूटने वालों को महिमामंडित किया गया।

अब कम्युनिटी हिस्ट्री पर भी काम होना चाहिए

रवींद्रनाथ टैगोर विवि के कुलाधिपति संतोष चौबे ने कहा कि भोपाल के इतिहास की बात आती है दोस्त मोहम्मद के 1706 में आने से अगले 200-300 वर्षों के बाद का ही इतिहास बताया और पढ़ाया जाता है जबकि उसकी मृत्यु 1726 में हो गई थी। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत का विश्व की जीडीपी में 27 से 30 फीसदी योगदान था, जब अंग्रेज भारत से गए तब तो यह भागीदारी 2.7 फीसदी रह गई थी। आगे कहा कि भारत का इतिहास लोक का इतिहास है और अब तो कम्युनिटी के इतिहास पर भी काम होना चाहिए।

भोपाल क्रिएटर्स समिट 23 को

भोपाल। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके शहर के युवा अपने टैलेंट को दुनिया के सामने पेश कर रहे हैं। 23 अप्रैल को सिटी के यंग क्रिएटर्स द्वारा 'भोपाल क्रिएटर्स समिट' का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें भोपाल एवं इंदौर सहित आसपास के 400 से ज्यादा क्रिएटर्स शामिल होंगे। इस दौरान न सिर्फ एक-दूसरे की प्रतिभाओं से रूबरू होंगे, बल्कि डांस, सिंगिंग और पोएट्री में अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे। कलाकारों को अपनी जर्नी की स्टोरी शेयर करने का मौका मिलेगा। एमपी नगर जोन-2 स्थित को-वर्क स्पेस में कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस इवेंट को शहर के ट्रेवल फोटोग्राफर मयंक तिवारी, वंशदीप एवं प्रियांश द्वारा ऑर्गेनाइज किया जा रहा है।

राजधानी
मध्य स्वदेश
भोपाल, शुक्रवार, 21 अप्रैल 2023

स्वदेश 21/4/23

संगोष्ठी

धरोहर संस्था द्वारा स्वतंत्रता संग्राम एवं रियायतों का विलीनीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से लिखे जाने की जरूरत

मध्य स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

देश के स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों पर लिखने और पढ़ने वाले बहुत से लोग हैं। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश के एकीकरण में अपना योगदान देकर रियायतों के विलीनीकरण हेतु आंदोलन करने वाले लोगों पर न तो बहुत लिखा गया न ही उन पर चर्चा की जाती है। उन हजारों आंदोलनकारियों को जिन्होंने भोपाल के अलावा कई अन्य रियायतों को भारत में मिलाने के लिए लगातार संघर्ष किया, परिवार के परिवार, महिलाओं और बच्चों के साथ सड़कों पर उतर आए, उन लोगों को स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका में तक नहीं देखा जाता। आज उन योद्धाओं को याद तक नहीं किया जाता। उल्टा नवाबों को महान बताने की कोशिशें की जाती हैं। यह बात प्रसिद्ध पुरातत्वविद श्रीमती पूजा सक्सेना ने पुरातत्व संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं रियायतों का विलीनीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कही।

धरोहर संस्था द्वारा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी में राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त कृष्ण मोहन सोनी ने कहा कि इतिहास का पठन-पाठन से पहले उसकी सत्यता की जांच आवश्यक है। ऐसे कई तथ्य सामने आए जिनमें इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया। कई बार तो राष्ट्रीय हितों को भी ताख पर रखकर देश को लूटने वालों को महिमामंडित किया गया। ऐसे इतिहास का खण्डन आवश्यक है। डॉ. संतोष चौबे ने कहा कि क्या कारण है की जब भी भोपाल के इतिहास की बात आती है दोस्त मोहम्मद के 1706 मे आने से अगले 200-300 वर्षों के बाद का ही इतिहास बताया और पढ़ाया जाता है। जबकि उसकी मृत्यु 1726 में हो गई थी। उन्होंने इतिहासकार धर्मराज के लेखों का उदाहरण देते हुए बताया कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत का विश्व की जीडीपी में 27-30 प्रतिशत भागीदारी थी। जब अंग्रेज भारत से गए तब भारत की विश्व की जीडीपी में 2.7 प्रतिशत भागीदारी रह गई थी। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. ममता चंसोलिया ने कहा कि इतिहास के गौरवपूर्ण पृष्ठों का लेखांकन आवश्यक है। यदि यह लेखांकन नहीं हुआ तो हमारी आने वाली पीढ़ियों अतीत के गौरवामृत के पान से अछूती रह जाएगी, जो कि देश के लिए राष्ट्रीय क्षति होगी। उन्होंने आगे कहा कि इतिहास हमेशा जीवंत रहता है लेकिन हम इसे अलग अलग चश्मे से देखते हैं। उत्तरप्रदेश उच्च शिक्षा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि भारतीय मनीषा मेधा की उपासिका रही है। इसलिए हमने भौतिकता को कम और बौद्धिकता को अधिक महत्व दिया है और इस तरह की संगोष्ठियां इसका प्रमाण हैं। संगोष्ठियां तो कई होती हैं लेकिन जो सबसे बड़ा मुद्दा सामने आता है, वह है संस्थाओं के सहयोग का। यह सहयोग यहां स्पष्ट दिख रहा है। यह बड़े ही गौरव की बात है कि 10 से अधिक संस्थाओं ने न केवल इस संगोष्ठी में सहयोग किया बल्कि उनके कर्ताधर्ता भी यहां उपस्थित होकर इसका हिस्सा बन रहे हैं। ऐसे दृश्य बिरले ही मिलते हैं।

मध्य स्वदेश
भोपाल, गुरुवार, 20 अप्रैल 2023

मध्य स्वदेश 20/4/23

'स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण' पर संगोष्ठी संपन्न

मध्य स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

इतिहास का पठन-पाठन से पहले उसकी सत्यता की जांच आवश्यक है। ऐसे कई तथ्य सामने आए जिनमें इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया।

कई बार तो राष्ट्रीय हितों को भी ताख पर रखकर देश को लूटने वालों को महिमा-मंडित किया गया। ऐसे इतिहास का खण्डन आवश्यक है। आज भारतीय इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से लिखे जाने की जरूरत है। बात बुधवार को भोपाल के पुरातत्व संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का

विलीनीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त श्रीकृष्ण सोनी ने संबोधित करते हुए कही।

धरोहर संस्था द्वारा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में संबोधित करते हुए प्रसिद्ध आर्कियोलॉजिस्ट श्रीमती पूजा सक्सेना ने कहा, देश के स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों पर लिखने और पढ़ने वाले बहुत से लोग हैं। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश के एकीकरण में अपना योगदान देकर रियासतों के विलीनीकरण हेतु आंदोलन करने वाले लोगों पर न तो बहुत लिखा गया न ही उन पर चर्चा की जाती है। उन हजारों आंदोलनकारियों को जिन्होंने भोपाल के अलावा कई अन्य रियासतों को भारत में मिलाने के लिए लगातार संघर्ष किया, परिवार, महिलाओं और बच्चों के साथ सड़कों पर उतर आए।

#Lecture

स्वतंत्रता संग्राम और रियायतों के विलीनीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विलीनीकरण के योद्धाओं को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल न किया जाना बड़ी गलती है : सक्सेना

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. देश के स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों पर लिखने और पढ़ने वाले बहुत से लोग हैं, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश के एकीकरण में अपना योगदान देकर रियायतों के विलीनीकरण के लिए आंदोलन करने वाले लोगों पर न तो बहुत लिखा गया न ही चर्चा हुई हैं। यह बात बुधवार को भोपाल के पुरातत्व संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम व रियासतों का विलीनीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रसिद्ध आर्कियोलॉजिस्ट पूजा सक्सेना ने कही। धरोहर संस्था की ओर से स्टेट म्यूजियम में आयोजित दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी का पहला दिन था। उद्घाटन में कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त कृष्ण सोनी, डॉ. संतोष चौबे, उप्र उच्च शिक्षा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ईश्वर शरण विश्वकर्मा मौजूद रहे।

इतिहास हमेशा जीवंत रहता है : चंसोलिया

प्राध्यापक डॉ. ममता चंसोलिया ने कहा, इतिहास के गौरवपूर्ण पृष्ठों का लेखांकन आवश्यक है। यदि यह लेखांकन नहीं हुआ तो हमारी आने वाली पीढ़ियां अतीत के गौरवामृत के पान से अछूती रह जाएंगी, जो देश के लिए राष्ट्रीय क्षति होगी। इतिहास हमेशा जीवंत रहता है लेकिन हम इसे अलग-अलग चश्मे से देखते हैं। उप्र उच्च शिक्षा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने भी विचार रखे।

भारत का इतिहास लोक का इतिहास है : डॉ. संतोष चौबे

डॉ. संतोष चौबे ने कहा कि क्या कारण है कि जब भी भोपाल के इतिहास की बात आती है। दोस्त मोहम्मद के 1706 में आने से अगले 200-300 वर्षों के बाद का ही इतिहास बताया जाता है। जबकि उसकी मृत्यु 1726 में हुई थी। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत का विश्व की जीडीपी में 27-30 % भागीदारी थी। जब अंग्रेज भारत से गए तब भारत की विश्व की जीडीपी में 2.7 % भागीदारी रह गई थी। भारत का इतिहास लोक का इतिहास है।

इतिहास से संबंधित नए-नए विषय सामने आए : सोनी

राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त कृष्ण मोहन सोनी ने कहा कि इतिहास का पठन-पाठन से पहले उसकी सत्यता की जांच आवश्यक है। ऐसे कई तथ्य सामने आए जिनमें इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया। कई बार तो राष्ट्रीय हितों को भी ताख पर रखकर देश को लूटने वालों को महिमामंडित किया गया। ऐसे इतिहास का खण्डन आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि इतिहास से संबंधित नये-नये ज्वलंत विषय सामने आएं, इसके लिए ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन जरूरी है।

धरोहर पुरास्थल, पुरावस्तु एवं सामाजिक संरक्षण संस्था द्वारा 19 - 20 अप्रैल को भोपाल में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

भोपाल। धरोहर पुरास्थल ,पुरावस्तु एवं सामाजिक संरक्षण संस्था द्वारा 19 -20 अप्रैल को भोपाल के श्यामला हिल्स स्थित राज्य पुरातत्व संग्रहालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी %स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण% विषय पर आयोजित की जा रही है. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद ,भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम से सम्बंधित साहित्य , पुरातात्त्विक सामग्रियों ,स्मृतियों के आधार पर भारत के जन-जन का इत्तिहास बोध और उसका दस्तावेजीकरण जिनका क्षणिक योगदान भी स्वतंत्रता संग्राम में रहा हो. इस संगोष्ठी के फलस्वरूप शोधकर्ताओं में भारत के स्वतंतत्रत्ता संग्राम और विलीनीकरण एवं भारत के लोक इतिहास को जन - जन तक पहुंचाने की प्रवृतियों में बड़ावा मिलेगा। आड़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन धरोहर पुरास्थल ,पुरावस्तु एवं सामाजिक संरक्षण संस्था के अलावा रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, स्वराज संस्थान संचालनालय ,म.प्र. शासन , संस्कृत ,प्राच्य भाषा शिक्षण एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद , सरोजनी नायडू महाविद्यालय, भोपाल, दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान , भोपाल , एमएलबी गर्ल्स कॉलेज , भोपाल , प्रसार सोशल एन्ड वेलफेयर सोसाइटी, भोपाल , भारतीय इतिहास संकलन समिति ,मध्यप्रांत , श्रीसत्य साईं महिला महाविद्यालय ,भोपाल , हेरिटेज सोसाइटी, पटना और सृजन पूर्व छात्रा संघ, भोपाल द्वारा आयोजित की जा रही है. इस संगोष्ठी के आयोजन सचिव पूजा सक्सेना, धरोहर पुरास्थल ,पुरावस्तु एवं सामाजिक संरक्षण संस्था जबकि सह-सचिव डॉ. सावित्री सिंह परिहार, सह आचार्य इतिहास विभाग , मानविकी एवं उदार कला संकाय, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल हैं।

भोपाल, गुरुवार 20 अप्रैल, 2023

नवदुनिया
सिटी

विलीनीकरण के योद्धाओं का योगदान सेनानियों से कम नहीं

राज्य संग्रहालय में धरोहर संस्था के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बीडीए के अध्यक्ष कृष्ण मोहन सोनी को सम्मानित करतीं दीपिका श्रीवास्तव। ● नवदुनिया

देश के स्वतंत्रता संग्राम और सेनानियों पर लिखने और पढ़ने वाले बहुत से लोग हैं लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश के एकीकरण में अपना योगदान देकर रियासतों के विलीनीकरण हेतु आंदोलन करने वाले लोगों पर न तो बहुत लिखा गया न ही उन पर चर्चा की जाती है। उन हजारों आंदोलनकारियों को, जिन्होंने भोपाल के अलावा कई अन्य रियायतों को भारत में मिलाने के लिए लगातार संघर्ष किया, उन्हें स्वतंत्रता सेनानी की भूमिका तक में नहीं देखा जाता। भोपाल के नवाब ने जब भारत में मिलने से इन्कार कर दिया था तो भोपाल, सीहोर रायसेन और आसपास के कई सेनानियों ने महीनों तक आंदोलन कर भोपाल को भारत में मिलाने के लिए संघर्ष किया। जिसके परिणाम स्वरूप नवाब को पाकिस्तान भागना पड़ा और भोपाल को भारत का हिस्सा बना लिया। अखंड भारत के निर्माण में इन सेनानियों की भूमिका स्वतंत्रता सेनानियों से कम नहीं थी लेकिन आज उन योद्धाओं को याद तक नहीं किया जाता। यह बात बुधवार को राज्य संग्रहालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आर्कियोलाजिस्ट पूजा सक्सेना ने कहीं। धरोहर संस्था द्वारा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। बुधवार को इस संगोष्ठी का उद्घाटन बीडीए अध्यक्ष कृष्णमोहन सोनी, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. संतोष चौबे, उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा आयोग के पूर्व अध्यक्ष ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने किया। इस मौके पर प्रो. ममता चंसोरिया एवं धरोहर संस्था की अध्यक्ष नीलिमा गुर्जर उपस्थित रहीं। उद्घाटन के बाद मुख्य सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डा. मुकेश मिश्रा उपस्थित रहे।

'ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन आवश्यक'

राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त कृष्ण मोहन सोनी ने कहा कि इतिहास के पठन-पाठन से पहले उसकी सत्यता की जांच आवश्यक है। ऐसे कई तथ्य सामने आए, जिनमें इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया। कई बार तो राष्ट्रीय हितों को भी ताक पर रखकर देश को लूटने वालों को महिमामंडित किया गया। ऐसे इतिहास का खंडन आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि इतिहास से संबंधित नए-नए ज्वलंत विषय सामने आएं इसके लिए ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन आवश्यक।

बदलते जमाने का अखबार
पीपुल्स समाचार

Date 18 Apr, 2023 - Newspaper - page11

Image Text

राज्य संग्रहालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 19 अप्रैल से

'स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों के विलीनीकरण' पर संगोष्ठी

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 8989210501

राज्य संग्रहालय में 19 और 20 अप्रैल को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'स्वतंत्रता संग्राम एवं रियासतों का विलीनीकरण' विषय पर आयोजित की जा रही है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित साहित्य, पुरातात्त्विक सामग्रियों एवं भारत के लोक इतिहास को जन-जन तक पहुंचाने की प्रवृतियों में बढ़ावा मिलेगा। संगोष्ठी का आयोजन धरोहर पुरास्थल, पुरावस्तु एवं सामाजिक संरक्षण संस्था के अलावा रबीन्द्रनाथ टैगोर विवि, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृत संस्थान एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र, सरोजनी नायडू महाविद्यालय, एमएलबी कॉलेज, प्रसार सोशल एंड वेलफेयर सोसाइटी, भारतीय इतिहास संकलन समिति, सत्य साई महिला महाविद्यालय, हेरिटेज सोसाइटी द्वारा किया जा रहा है।